बुक की लॉन्च सेरेमनी शुक्रवार को होटल रामबाग पैलेस में हुई। लेखक मुकुल देवा ने बुक में वॉर और सोल्जर्स से जुड़ी कहानियां शेअर की हैं।

'द गरुड़ स्ट्राइक' में 1971 की जंग और जांबाजों की कहानी

सिटी रिपोर्टर ▶ **जयपुर**

जंग जब जीत ली जाती है तो उसमें कमांडोज़ के जीतने की कहानी होती है। ऑफिसर्स के किस्से होते हैं। लेकिन उस जंग में शामिल उन जवानों का जिक्र नहीं होता, जिनकी खून की स्याही से जीत की इबारत लिखी जाती है। 1971 के इंडो-पाक युद्ध में हिंदुस्तान को जीत दिलाने वाले ऐसे ही जांबाजों की कहानी है 'द गरुड़ स्ट्राइक' बुक में। इस बुक को शुक्रवार को जयपुर में लॉन्च किया गया। इसे प्रस्तुत करने का विचार लेफ्टिनेंट जनरल हिम्मथ सिंह की वाइफ जेन का है।

वे कहती हैं, वॉर पर बहुत कुछ लिखा गया है लेकिन कभी जवानों का पहलू किसी ने नहीं लिखा। ये बुक गाड्र्स 1 राजपूत ब्रिगेड की चौथी बटालियन की कहानी है। मेरे पति ने इस गार्ड की कमान संभाली थी। इस बटालियन में साधारण और आम आदमी थे। इन लोगों ने 16 दिन के अंदर 75 मिलियन लोगों को पाकिस्तानी सेना से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ढाका में ये लोग सबसे पहले पहुंचे थे और सबसे आखिर में जीत कर वहां से निकले थे। 16 दिन का यह अभियान भारत की अग्रणी भूमिका के लिए निर्णायक था। लेफ्टिनेंट कर्नल हिम्मथ सिंह की लीडरशिप में 4 गाड्र्स (1 राजपूत) का यह अभियान आधुनिक समय के सबसे तेज और सफल सैन्य अभियानों में से एक माना जाता है। इससे न सिर्फ बांग्लादेश के बनने का रास्ता मिला, बल्कि 95 हजार पाकिस्तानी सैनिकों की गिरफ्तारी भी संभव हुई। लॉन्चिंग के मौके पर जंग के लिए वीर चक्र हासिल कर चुके मेजर चंद्रकांत भी मौजूद थे, उनकी कहानी भी इस किताब में शामिल है।

▶ बुक लॉन्च में 1971 में वीरचक्र प्राप्त मेजर चंद्रकांत जैन, हिम्मथ सिंह, जयसिंह और राइटर मुकुल देवा।

रिसर्च में चार साल

जेन ने बताया, इस बुक को लिखने से पहले चार साल की रिसर्च की गई है। इस दौरान वे खुद बांग्लादेश और हिंदुस्तान के छोटे-छोटे गांवों में गईं। इस दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों, जवानों, नॉन कमिशन और जूनियर कमिशन अधिकारियों और वार विडोज से मुलाकात की।इस बुक को लिखने वाले मुकुल देवा जो खुद भी सेना में रह चुके हैं, ने कहा यह किताब सिर्फ जंग में जीत नहीं है। इसमें इमोशन है, जीत है और इंतजार भी। इस युद्ध की सबसे अच्छी बात ये है कि इसे जीतने वाले जवान आज भी जिंदा हैं। ऐसे में ये कहानियां आज भी लोगों के जेहन में ताजा हैं। ऐसे में ये जिम्मेदारी थी कि मैं इन सभी के बीच बैलेंस बनाकर रहूं। जिस तरह के रिव्यू मुझे मिल रहे हैं उससे लग रहा है कि मैं अपनी कोशिश में सफल हो पाया। इस कहानी में रीडर बांग्लादेश की मिट्टी और कीचड़ से होकर पैदल चलने, बंदूक के धुएं की गंध को महसूस करेंगे और शरीर पर गोलियों के असर, रक्त, भय और आंसुओं का अहसास होगा।

गौरतलब है कि 4 गाड्र्स (1 राजपूत) ने सबसे पहले ढाका में प्रवेश कर पाकिस्तानी सेना को परास्त किया था।